# शोध सारांश

## लघु शोध प्रबंध

## “महिला निर्देशकों की हिन्दी फिल्मों में चित्रित नारी समस्याएं”

सिनेमा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। सिनेमा अपने जन्म के मात्र कुछ समय बाद ही भारत पहुँच गया था। सिनेमा ने भारतीय जनता पर गहरा प्रभाव डाला। सिनेमा जल्दी ही भारतीय समाज का हिस्सा बन गया। भारत में सिनेमा बहुत जल्दी लोकप्रिय हो गया आज तक सिनेमा की लोकप्रियता बरकरार है। सिनेमा मानवीय जीवन एवं भावनाओं की पर्दे पर पुनरावृत्ति करता है। सामाजिक जीवन के महिला और पुरुष दो प्रमुख घटक है। जब पर्दे पर दोनों की उपस्थिती होगी तो ही अभिव्यक्ति अधिक मुखर होगी।

भारतीय सिनेमा के जनक भारत की पहली फिल्म के लिए अभिनेत्री नहीं खोज पाए थे। दादा साहब फाल्के को अपनी दूसरी फिल्म मोहिनी भस्मासुर के लिए अभिनेत्री मिल गई थी और 1914 में पहली बार महिला कलाकार का प्रवेश भारतीय सिनेमा में हुआ। भारतीय सिनेमा में महिलाओं की समस्याओं का चित्रण तो मूक दौर से ही होने लगा था जिसमें ‘अछूत कन्या’ एवं ‘दुनिया न माने’ आदि महत्वपूर्ण फिल्में है। जब भारत में बोलती फिल्मों का दौर शुरू हुआ तो उसमें भी भारतीय निर्देशकों ने महिलाओं की समस्याओं को पर्दे पर प्रस्तुत किया जिसमें हमारी बेटी, दहेज, मदर इंडिया, सुजाता, बंदिनी, आदि महिला समस्याओं की दृष्टि से बहुत सुंदर फिल्म है। लेकिन सभी फिल्मों में भारतीय नारी की समस्याओं को परंपरावादी स्वरूप में ही प्रस्तुत किया गया जैसे – सौन्दर्य प्रेम प्रतिमा, ममता मयी माँ, त्यागमयी बहन, भावी, पत्नी आदि। यह स्वरूप पहले से ही भारतीय ग्रन्थों एवं समाज में प्रचलित रहा है। इसलिए मूल नारी समस्या पर्दे पर नज़र ही नही आई। नारी समस्याओं की अभिव्यक्ति में महिला फिल्म निर्देशकों का कार्य अत्यंत महत्त्व पूर्ण रहा हैं। उन्होंने नारी की वास्तविक समस्याओं को यथार्थ रूप में पर्दे पर प्रस्तुत किया है। किसी भी समस्या के संबंध में समाजिक तौर पर बदलाओं लाने के लिए जागरूकता पहली सीढ़ी है। महिला फिल्म निर्देशकों में अरुणा राजे, दीपा मेहता, गुरिंदर चड्डा, कल्पना लाज़मी, मीरा नायर, सोनाली बोस, लीना यादव, ज़ोया अख्तर, गौरी शिंदे आदि का कार्य उल्लेखनीय है। भारतीय हिन्दी सिनेमा में महिला निर्देशकों की संख्या बहुत कम है इसलिए उनकी फिल्मों की संख्या

भी कम है। लेकिन उन्होंने जो फिल्में बनाई है वे फिल्में सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है जैसे- रिहाई, फायर, वॉटर, दमन, चिंगारी, दरमियाँ, राव साहेब, पार्चड, दिल दड़कने दो, इंग्लिश विंगलिश आदि का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है।

महिला फिल्म निर्देशकों ने अपनी फिल्मों में सेक्स की समस्या, पारिवारिक समस्या, शिक्षा की समस्या, बाल विवाह की समस्या, आदि को पर्दे पर यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है, इस दृष्टि से उन्होंने महत्त्वपूर्ण फिल्में बनाई है। जिसका समाज पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा है।

इस लघु शोध प्रबंध में महिला निर्देशकों के निर्देशन एवं उनकी फिल्मों का निष्पक्ष रूप से अध्ययन किया गाय है। सामाजिक फिल्मों के माध्यम से समाज को जागरूक करने में महिला निर्देशकों का महत्तपूर्ण योगदान है। महिला निर्देशक आज भी हिन्दी सिनेमा में अपना स्थान बनाने के लिए संघर्षरत है। इसका प्रमाण है, हिन्दी सिनेमा में उनकी लगभग 03% संख्या। हिन्दी सिनेमा में महिला निर्देशकों के कार्य को हमेशा अनदेखा किया है। भारतीय सिनेमा के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में कई आयोजन किए गए अधिकतम पत्र-पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में सिनेमा विशेषांक प्रकाशित हुए उनमें उनका कहीं भी उल्लेख नही किया गाय है। यह अत्यंत खेद जनक है। इस लघु शोध प्रबंध में महिला निर्देशकों के कार्य एवं उनकी फिल्मों में चित्रित नारी समस्याओं को स्पष्टतः प्रस्तुत किया गया है।

इस लघु शोध प्रबंध में समस्या के निरूपण अध्ययन एवं निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए ऐतिहासिक शोध प्रविधि, गुणात्मक शोध प्रविधि, मात्रात्मक शोध प्रविधि एवं साक्षात्कार, अवलोकन और प्रश्नावाली विधियों का प्रयोग किया गया है।